योजना का सार

भारतीय ज्ञान प्रणाली की विरासत

संदर्भ

- अक्तूबर 2020 में केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) नामक एक प्रभाग की स्थापना की, जिसका मुख्यालय नई दिल्ली में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (AICTE) में है।
- प्राचीन काल से भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञान के निरंतर प्रवाह को दर्शाते 'भारतीय ज्ञान' का उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास के लिए उसे भौतिकवादी एवं आध्यात्मिक जीवन के लिए योग्य बनाना है।
- विष्णुपुराण कहता है 'सा विद्या या विमुक्तये', इस प्रकार ज्ञान का उद्देश्य मुक्ति (दु:ख एवं बंधन से) के रूप में परिभाषित किया गया है। उपनिषदों के दर्शन के अनुसार, भौतिक शब्द वास्तविक नहीं है, इसलिए भौतिक ज्ञान महत्त्वपूर्ण होते हुए भी विद्या नहीं है। उसका मानना है कि केवल एक ही प्रकार का ज्ञान खतरनाक है।
- यह सुझाव देता है कि मनुष्य को भौतिक ज्ञान की मदद से सुखी सांसारिक जीवन जीना चाहिए और आध्यात्मिक ज्ञान की मदद से अमर स्थान प्राप्त करना चाहिए। मुंडकोपनिषद् में विद्या को परा विद्या और अविद्या को अपरा विद्या कहा गया है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली

- भारतीय ज्ञान काफी हद तक परंपरा पर आधारित है। ये परंपराएँ भारतीय सभ्यता को दुनिया की सबसे पुरानी जीवित सभ्यता बनाती है। साथ ही,

परंपराओं में सुधार भी होते रहे हैं और 'भारतीय ज्ञान' विकसित होता रहा है। प्रलेखित ज्ञान के क्षेत्र में वेद ज्ञान के सबसे पुराने ग्रंथ हैं। वेद के ज्ञान को चार वेदों- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के रूप में प्रलेखित किया गया है।

- चार उपवेद भी हैं- आयुर्वेद (चिकित्सा का अध्ययन), धनुर्वेद (धनुर्विद्या एवं युद्ध का अध्ययन), गंधर्ववेद (प्रदर्शन कलाओं का अध्ययन) और शिल्पवेद (वास्तुकला का अध्ययन)। वेदों में दार्शनिक और व्यावहारिक ज्ञान दोनों शामिल हैं।
- उपनिषद् दार्शनिक शिक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वेदों की अवधारणा को सरल भाषा में समझाने के लिए पुराण लिखे गए हैं। उनकी पाँच विशेषताएँ हैं, जैसेA. ब्रह्मांड की रचना, उसका विनाश एवं जीर्णोद्धार, देवताओं व कुलपिताओं की वंशावली, मनु का शासनकाल (जिन्हें मन्वंतर कहा जाता है) और राजाओं की जातियों का इतिहास।
- वैदिक परंपरा से 18 पुराण एवं 18 उपपुराण और जैन परंपरा से 3 पुराण हैं। पुराण में ज्ञान के कई रोचक रूप हैं जिनमें चिकित्सा, योग, संगीत, गणित व आदर्श आचार संहिता शामिल हैं। कहानियों के रूप में गहरे दार्शनिक वैज्ञानिक विचार भी हैं।
- विश्वव्यापी गैर-संधारणीय विकास के आधुनिक समय में 'भारतीय ज्ञान' अधिक प्रासंगिक हो गया है। वर्ष 2015 से 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। कीटनाशकों की कमियों को समझते हुए किसान जैविक खेती की ओर बढ़ रहे हैं। हर्बल (जड़ी-बूटी) दवाओं और विलासितामुक्त जीवन शैली में नए सिरे से रुचि पैदा हो रही है। पारंपरिक भवन डिज़ाइन को भी प्रमुखता मिल रही है।

- वैदिक सभ्यता की समय-सीमाएँ निर्धारित करना कठिन है। वेद का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक रूप से प्रसारित किया जाता था। पुराणों की युग प्रणाली के अनुसार, कलियुग की शुरुआत 3102 ईसा पूर्व हुई थी। इससे पहले द्वापर युग था जो 8,64,000 वर्षों तक चला; उससे पहले त्रेता युग था जो 1,296,000 वर्षों तक चला और सतयुग था जो 1,728,000 वर्षों तक चला।
- इस प्रकार, आधुनिक इतिहासकारों के दृष्टिकोण के विपरीत, वैदिक सभ्यता हज़ारों वर्ष पुरानी नहीं है, बल्कि यह लाखों वर्ष पुरानी है। वैदिक सभ्यता लगभग 1500 ईसा पूर्व शुरू हुई थी, जबकि सिंधु घाटी सभ्यता लगभग 3300 ईसा पूर्व शुरू हुई थी। पुराणों का (आलेखिकरण) दस्तावेज़ीकरण चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से 11oha शताब्दी ईसवी के अंतराल में किया गया था।
- अंग्रेज़ों की शिक्षा नीति की शुरुआत के साथ पुराणों के अध्ययन में गिरावट आई और कुछ गलत धारणाएँ बन गई हैं। उदाहरण के लिए, पुराण कार्य पर आधारित वर्ण व्यवस्था की बात करते हैं। कार्यों को शिक्षा, सुरक्षा, व्यवसाय एवं सेवा के रूप में वर्गीकृत किया गया है। ऐसा उल्लेख मिलता है कि विभिन्न द्वीपों में चार वर्णों, अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता था। कूर्म पुराण के अनुसार, लक्षद्वीप में इन्हें क्रमश: आर्यक, कुरव, विदश व भावी कहा गया है। इससे पता चलता है कि पुराणों के लेखकों ने संपूर्ण विश्व की सामाजिक संरचना को लिपिबद्ध तरीके से दर्ज करने का प्रयास किया था।
- रामायण और महाभारत को इतिहास ग्रंथ कहा जाता है। भगवद्गीता महाभारत का ही एक भाग है, जिसका मूल नाम जय-संहिता था। वैदिक सभ्यता से अलग कई समानांतर विधाएँ (स्कूल) हैं।

- दो प्रमुख मार्ग जैन एवं बौद्ध धर्म हैं। आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, जैन धर्म की शुरुआत वर्द्धमान महावीर (लगभग 599 ईसा पूर्व-527 ईसा पूर्व) ने की थी। हालाँकि, जैन परंपरा के अनुसार, जैन धर्म वैदिक सभ्यता जितना ही पुराना है। इसी तरह, बौद्ध धर्म भी बहुत पुराना है हालाँकि आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार, इसकी स्थापना गौतम बुद्ध (लगभग 563 ईसा पूर्व-483 ईसा पूर्व) ने की थी। जैन व बौद्ध धर्म दोनों का भारतीय ज्ञान प्रणालियों में बड़ा हिस्सा है। इसके अलावा, ज्ञान की कई अन्य धाराएँ भी हैं।
- ऐतिहासिक काल में गणित व खगोल विज्ञान पर बहुत काम हुआ है। कुछ प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री हैं- बौधायन (लगभग 800-700 ईसा पूर्व), मानव (लगभग 750-650 ईसा पूर्व), आपस्तम्ब (लगभग 600-500 ईसा पूर्व), पाणिनि (लगभग 520-460 ईसा पूर्व), कात्यायन (लगभग 300-200 ईसा पूर्व), भरत मुनि (लगभग 400-200 ईसा पूर्व), आर्यभट्ट (476-550 ई.), वराहमिहिर (505-587 ई.) और परमेश्वर (लगभग 1360-1455 ई.)। रामानुजन (1887-1920) ने भी गणित में कई प्रमेय विकसित किए वे भारतीय दर्शन व परंपरा में बहुत विश्वास रखते थे।
- चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथ शरीर रचना विज्ञान, विकृति विज्ञान व रोग प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हैं। 'शल्य चिकित्सा के जनक' के रूप में जाने जाने वाले सुश्रुत ने मोतियाबिंद सर्जरी जैसी प्रक्रियाओं का वर्णन किया।
- सिद्ध प्रणाली की उत्पत्ति तमिलनाडु में हुई। यह प्रणाली एक अन्य भारतीय स्वास्थ्य पद्धति है जो शरीर, मन व आत्मा के बीच सामंजस्य बनाए रखने पर केंद्रित है। भरत मुनि द्वारा 'नाट्य शास्त्र' नृत्य, नाटक और संगीत को सम्मिलित करते हुए प्रदर्शन कलाओं पर एक व्यापक ग्रंथ है। यह कला, मूर्तिकला, चित्रकला

और मंदिर वास्तुकला की अवधारणाओं का परिचय देता है जो धार्मिक विषयों और रूपक अवधारणाओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

- बहुत सारा 'भारतीय ज्ञान' विशिष्ट समुदायों और जनजातियों के पास उपलब्ध है। इस बात पर ज़ोर दिया जाना चाहिए कि केवल संस्कृत-आधारित ग्रंथ ही आई.के.एस. का संपूर्ण स्रोत नहीं है। भारत में कई तरह की भाषाएँ हैं, जिनमें इंडो-तिब्बती भाषाएँ भी शामिल हैं, जो असम और भारत के पूर्वोत्तर भाग के अन्य राज्यों में जीवित हैं।
- ऐतिहासिक दृष्टि से असम अपनी पीतल एवं कांस्य ढलाई और धातुकर्म तकनीकों के लिए प्रसिद्ध था, विशेष रूप से हाजो एवं सरथेबारी जैसे क्षेत्रों में। सुआलकुची मुगा रेशम पर बुनाई के लिए प्रसिद्ध हुआ। इसी तरह, गुवाहाटी के अम्बारी में सिरेमिक (चीनी मिट्टी के बर्तन बनाने की) परंपराएँ भारत की सबसे पुरानी परंपराओं में से हैं। शिलांग, मेघालय की लौह और सिरेमिक तकनीकें 3,000 साल से भी ज़्यादा पुरानी होने का अनुमान है। दुर्भाग्य से, पूर्वी और उत्तर-पूर्वी भारत की विनिर्माण विरासत का सीमित प्रलेखिकरण (दस्तावेज़ीकरण) है।

निष्कर्ष

- भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरुद्धार और अनुकूलन राष्ट्र की समृद्ध बौद्धिक विरासत को संरक्षित करने व इसे आधुनिक समाज की मांगों के साथ संरेखित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 ने एक व्यापक रूपरेखा प्रदान की है जो शैक्षिक पाठ्यक्रम में आई.के.एस. को शामिल करने को प्रोत्साहित करती है, सीखने के लिए एक समग्र एवं समावेशी दृष्टिकोण को बढ़ावा देने में इसके महत्त्व पर प्रकाश डालती है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली की उपनिवेशीकरण से मुक्ति

संदर्भ

- भारत 'ज्ञान-भूमि' शब्द का साक्षात् उदाहरण है। यह पहचान न केवल उल्लेखनीय कलाओं, वास्तुकला, खगोल विज्ञान, विज्ञान, चिकित्सा (आयुर्वेद), भाषाओं, साहित्य, दर्शन और इंजीनियरिंग के प्रसार व उद्भव से स्थापित होती है बल्कि वैदिक साहित्य, वेद, उपनिषद् एवं उपवेद जैसे ज्ञान ग्रंथों व विशिष्ट प्रणालियों के विद्यमान होने से भी होती है जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत का मार्गदर्शन किया है।
- औपनिवेशिक शासन के आरंभ से ही इन परंपराओं को जान-बूझकर हाशिए पर डाल दिया गया। मैकाले के 'मिनट ऑन एजुकेशन' (1835) में वर्णित औपनिवेशिक शिक्षा नीतियों ने स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को यूरोसेंट्रिक प्रतिमानों से बदलने का प्रयास किया जिससे भारतीयों की कई पीढ़ियाँ अपनी बौद्धिक विरासत से दूर हो गईं।

युगों-युगों से प्रवाहित भारतीय ज्ञान प्रणाली

- प्राचीन काल से ही भारत ने कई सत्ताओं का सामना किया है जिन्होंने इसकी समृद्ध अर्थव्यवस्था का दोहन करने और इसके समृद्ध सांस्कृतिक मूल्यों, दार्शनिक परंपराओं व मान्यताओं को खंडित करने की कोशिश की।
- भारतीय दर्शन के अभिन्न अंग उपनिषद् मानसिक और शारीरिक अवस्थाओं से भिन्न आत्म सार की खोज करते हैं। वे दो मार्ग प्रस्तुत करते हैं- निवृत्ति (अनासक्त आत्म-ज्ञान) और प्रवृत्ति (सहज क्रिया)। अद्वैत वेदांत मानता है कि आत्मा एवं ब्रह्म एक समान हैं और अनुभवजन्य दुनिया माया (भ्रम) के रूप में है। इसी तरह भट्ट मीमांसा 'आत्मा' की परिवर्तनकारी लेकिन शाश्वत प्रकृति की खोज करती है और इसे स्वर्ण के लचीलेपन के समान बताती है। जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म भी इस विमर्श में योगदान देते हैं।

- मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन ने भक्ति में निहित एक दार्शनिक परिवर्तन को विशिष्ट रूप दिया। दक्षिणी भारत (7oha-12oha सदी) और उत्तरी क्षेत्रों (12oha-17oha सदी) तक इसका प्रसार था। श्री तुलसीदास, श्री चैतन्य महाप्रभु, श्री नानक एवं श्री कबीर जैसे संतों ने सगुण व निर्गुण परंपराओं के माध्यम से ईश्वर के प्रति एकनिष्ठ भक्ति और प्रेम को बढ़ावा दिया तथा मुक्ति की राह दिखाई।
- आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो और सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे समकालीन दार्शनिकों ने भारतीय ज्ञान परंपरा के सार को महत्त्वपूर्ण रूप से रेखांकित किया। विवेकानंद ने तर्कसंगतता, शिक्षा एवं सार्वभौम धर्म के सिद्धांतों पर बल दिया जिसे वे 'मानवतावाद' के रूप में परिभाषित करते हैं। विवेकानंद की दार्शनिक संरचना इस विचार पर आधारित है कि प्रत्येक आत्मा में अंतर्निहित दैवत्व होता है जिसे आत्म-प्रयास, अनुशासित प्रशिक्षण एवं उचित शैक्षिक मार्गदर्शन के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है।
- इसी तरह श्री अरबिंदो के दार्शनिक विचार आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रकृतिवाद एवं व्यावहारिकता के संश्लेषण को प्रकट करते हैं। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दर्शन अद्वैत वेदांत में निहित है जो भारतीय दर्शन की एक गैर-द्वैतवादी परंपरा है। वे जैविक एकता, सत्य एवं मानव प्रकृति की विविधता के सिद्धांतों में विश्वास करते थे।
- इस प्रकार, भारतीय ज्ञान प्रणाली एक गतिशील और विकासशील सांस्कृतिक संरचना व परंपरा का प्रतिनिधित्व करती है जिसने अपने मूल विचारों एवं सिद्धांतों को बनाए रखते हुए सतत् रूप से विभिन्न ऐतिहासिक कालों के लिए स्वयं को ढाला है। इसके घटक चित्त, शरीर व आत्मा के बीच आवश्यक संबंधों को रेखांकित करते हैं।

उपनिवेशवाद से मुक्ति एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली

- आधुनिक काल में उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया वैश्विक स्तर पर विभिन्न उपनिवेशवादियों व उपनिवेशित आबादी के बीच भिन्नताओं को दर्शाते हुए कई सार्वभौमिक चरणों और मौलिक सिद्धांतों को शामिल करने के रूप में जानी जाती है। औपनिवेशिक ताकतों ने न केवल भारत की अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया, बल्कि भारतीय शिक्षा प्रणाली, परंपराओं, प्रशासन, वास्तुकला व सांस्कृतिक परिपाटियों में हस्तक्षेप सहित विभिन्न तरीकों से भारतीय आबादी पर औपनिवेशिक मानसिकता भी थोपी।
- इससे उपनिवेशीकरण के बाद के काल में भारत में काफी सांस्कृतिक संकरण हुआ जिसमें पारंपरिक मूल्य और पाश्चात्य ज्ञान प्रणाली व जीवन शैलियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं तथा परस्पर एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। उपनिवेशीकरण का सबसे गंभीर प्रभाव चेतना के दायरे में हुआ।
- भारत को वर्ष 1947 में स्वतंत्रता मिली थी। उसके बाद उपनिवेशवाद, मुख्य रूप से ब्रिटिश उपनिवेशवाद के आर्थिक प्रभाव को समझने के लिए कुछ प्रयास किए गए। फिर भी औपनिवेशिक मानसिकता के अवशेष भारतीय जनता की चेतना से पूरी तरह से लुप्त नहीं हुए हैं, यह एक ऐसा तथ्य है जिसे एडवर्ड सईद ने 'ओरिएंटलिज़्म' का नाम दिया है। सईद के अनुसार, ओरिएंटलिज़्म औपनिवेशिक शासन के लिए एक वैचारिक आधार बना। फिर भी, औपनिवेशिक युग के बाद ओरिएंटलिस्ट धारणाएँ गायब नहीं हुईं।
- ओरिएंटलिज़्म पुनरावृत्ति के ज़रिए अपने प्रभाव को बनाए रखता है। ओरिएंटलिज़्म से जुड़े दृष्टिकोण, रूढ़िबद्ध धारणाएँ और कार्यप्रणालियाँ पिछली दो शताब्दियों में पुनर्जीवित हुई हैं तथा दोहराई गई हैं। ये अवशेष आज भी प्रचलन में हैं। इसी तरह फ्रांट्ज फैनन के 'औपनिवेशिक अलगाव' ने पश्चिमी प्रतिमानों द्वारा थोपी गई विसंगति को उजागर किया जिससे स्वदेशी ज्ञान और विरासत के पुनरुद्धार की आवश्यकता हुई।

- डगलस हाइड, पैट्रिक पीयर्स और जॉन लोर्न कैंपबेल जैसे राष्ट्रवादी बुद्धिजीवियों ने राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक व भाषाई क्षेत्रों के वि-उपनिवेशीकरण को बढ़ावा दिया है। उन्होंने अपने-अपने समुदायों में व्याप्त औपनिवेशिक मानसिकता की एक गंभीर चुनौती के रूप में निंदा की है।
- समाधान के रूप में वे विरासत भाषा शिक्षण और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की प्रगति की हिमायत करते हैं जिसमें पूर्व-औपनिवेशिक विरासत के सबसे सराहनीय तत्त्वों को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से एक समन्वय शामिल है। सांस्कृतिक परिपाटियों, ज्ञान संरचनाओं, इतिहास और अन्य विभिन्न सांस्कृतिक रूपों पर उपनिवेशवाद के स्थायी प्रभाव के साथ-साथ उपनिवेशीकरण की अवधारणा को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया गया है। यह पूर्व में उपनिवेशित समाजों के लोगों द्वारा अनुभव की गई जातीय या सांस्कृतिक हीनता की आंतरिक धारणा से संबंधित है।
- उपनिवेशीकरण से मुक्त होने में स्वदेशी ज्ञान के महत्त्व को बहाल करना शामिल है। चेतना को समझने और सत्य को जानने के साधन के रूप में भारतीय दर्शन मन (मनस) को बहुत महत्त्व देता है। स्वयं (आत्मा) को समझना व्यक्तिगत कल्याण (सुख) और परम मुक्ति (मोक्ष) को बढ़ावा देता है। भारतीय दर्शन की खोज जीवन के संतापों का निवारण और दु:ख (संसार) से मुक्ति पाने से उत्पन्न हुई। चार्वाक भौतिकवादियों को छोड़कर अधिकांश विचारधाराओं ने सच्चे आत्म के बारे में अज्ञानता को दूर कर मुक्ति (मोक्ष या निर्वाण) प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित किया।
- पश्चिमी शिक्षा को लागू करके औपनिवेशिक शक्तियों ने भारत के सामाजिक ताने-बाने को विकृत कर दिया, उनमें हीनता की भावना को बढ़ावा दिया और स्वदेशी परंपराओं से उनको दूर कर दिया। उन्होंने भारतीयों में सभ्यता, ज्ञान और संस्कृति के मामले में पश्चिम के मुकाबले खुद को हीन समझने की धारणा मन में बिठा दी।

- इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण प्रतिष्ठित प्राचीन भारतीय दार्शनिक और गणितज्ञ नागार्जुन को 'भारत का आइंस्टीन' कहना है, जबकि आइंस्टीन का जन्म नागार्जुन के जन्म से लगभग 1,600 साल बाद हुआ था। ऐतिहासिक रूप से भारत दार्शनिक विचारधाराओं का अग्रणी रहा है जिसकी समृद्ध परंपराओं की व्याप्तता प्राचीन से लेकर समकालीन समय तक है। ये दार्शनिक परंपराएँ दु:ख से मुक्ति और अस्तित्व के सच्चे अर्थ की अवधारणाओं से जुड़ी हुई हैं। इन दार्शनिक आयामों के साथ-साथ भारतीय ज्ञान परंपरा ने सभी के लिए संधारणीयता और समानता पर सतत् रूप से ज़ोर दिया है। इसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर चिंतन भी शामिल है जिसमें पर्यावरण संरक्षण भी शामिल है।
- भारत की स्वदेशी शिक्षा प्रणाली और कौशल विकास पद्धतियों से कई स्वदेशी भारतीय उद्योग फले-फूले और भारत में निर्मित सामान को दुनिया भर में सराहनीय महत्त्व दिया गया। इन भारतीय ज्ञान प्रणालियों के ऐतिहासिक महत्त्व का मूल्यांकन उनके आर्थिक मूल्य के संबंध में उस समय करना आवश्यक है जब उनके महत्त्व की तुलना आज के उच्च तकनीक उद्योग से की जा सकती है।
- रोग की रोकथाम के लिए आयुर्वेद और योग जैसी समग्र प्रणालियाँ और विज्ञान व गणित जैसे क्षेत्रों में कड़ी विद्वत्तापूर्ण जाँच परख कुछ अन्य मिसाल हैं। अनेक वैज्ञानिक खोजों के अलावा भारतीय विद्वानों ने उन्नत गणितीय अवधारणाओं को विकसित किया जिनमें शून्य का आविष्कार और आधार-दस दशमलव प्रणाली शामिल है जिसका वर्तमान में विश्व स्तर पर उपयोग किया जाता है।

निष्कर्ष

- भारतीय ज्ञान मीमांसा संरचना में आत्म-अस्तित्व की धारणा ने अपना सर्वोच्च महत्त्व बनाए रखा है। आज के वैश्विक युग में यह समझना आवश्यक है कि पूरी दुनिया में सूचनाओं की बाढ़ आई हुई है लेकिन ज्ञान की कमी है। प्रत्येक व्यक्ति

का मानना है कि वे स्वतंत्रता का आनंद ले रहे हैं फिर भी वास्तविकता यह है कि सभी एक भ्रामक दुनिया के बंदी हैं जिसमें कुछ ऐसे विचार या रास्ते नहीं हैं जो उन्हें दु:ख से मुक्ति दिला सकें। परिणामवश हम पर्यावरणीय मुद्दों, जलवायु परिवर्तन, भूख और महामारी जैसी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं साथ ही, हम जो कुछ भी हासिल करते हैं वह अक्सर मानव जीवन की कीमत पर होता है।

- यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि मानवता अपने मूल की ओर लौट रही है। इस परिप्रेक्ष्य में अपनी जड़ों को स्वीकार करना और विश्व का मार्गदर्शन करना महत्त्वपूर्ण है जैसा कि भारत ने प्राचीन काल से परंपरागत रूप में किया है। इस उद्देश्य पूर्ति के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा का पालन करना महत्त्वपूर्ण है जिसमें आत्म-ज्ञान के लिए सभी आवश्यक तत्त्व शामिल हैं और यह मानव जीवन एवं अनुभव के हर पहलू का समाधान प्रदान करती है।

जन औषधि केंद्रों तक सहकारी पहुँच

संदर्भ

- जन औषधि योजना का उद्देश्य समर्पित जन औषधि केंद्रों के ज़रिए सबके लिए उच्च गुणवत्ता वाली और किफायती दवाओं की आसान उपलब्धता सुनिश्चित करना है। इस योजना की शुरुआत वर्ष 2008 में की गई थी। वर्ष 2014 के बाद इस योजना में सुधार कर इसका नाम प्रधानमंत्री जन औषधि योजना किया गया। वर्ष 2016 में इसे प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना (PMBJP) नाम दिया गया।

प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना

- किसी खास दवा को विकसित करने वाली कंपनी पेटेंट के लिए आवेदन करती है। वह अनुसंधान पर हुए निवेश की भरपाई रॉयल्टी के ज़रिए करती है। इससे ब्रांडेड दवाओं की कीमत बढ़ जाती है। पेटेंट की अवधि खत्म होने

के बाद उस दवा को कोई भी निर्माता उन्हीं सक्रिय तत्त्वों का उपयोग कर कम खर्च पर जेनेरिक औषधि के रूप में बना सकता है।

- पत्र सूचना कार्यालय (PIB) के अनुसार, पी.एम.बी.जे.पी. के अधीन किसी दवा का मूल्य चोटी की तीन ब्रांडेड औषधियों की औसत कीमत के अधिकतम 50% के सिद्धांत पर निर्धारित किया जाता है।
- जन औषधि केंद्र दवाओं को ब्रांडेड औषधियों की तुलना में 50% से 90% तक कम मूल्य पर उपलब्ध कराते हैं। शुरुआत में हर ज़िले में एक जन औषधि केंद्र खोला जाना था। वर्ष 2014 तक लगभग 104 जन औषधि केंद्र खोले गए। इस परियोजना को फार्मास्युटिकल विभाग के अधीन भारतीय औषधि एवं चिकित्सा उपकरण ब्यूरो के ज़रिए लागू किया जा रहा है।
- उत्तर प्रदेश सहकार-से-समृद्धि को अपनाने में अग्रणी रहा है और राज्य में 5200 से अधिक प्राथमिक कृषि ऋण समिति (PACS) जन सेवा केंद्र के तौर पर काम कर रही हैं। पी.ए.सी.एस. अब प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र भी खोल रही है। पी.एम.बी.जे.पी. के तहत बी फार्मा या डी फार्मा धारक कोई भी व्यक्ति जन औषधि केंद्र खोल सकता है।
- जन औषधि सुगम मोबाइल ऐप भी विकसित किया गया है। इस पर नज़दीकी जन औषधि स्टोरों की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इस परियोजना के संबंध में मांग और आपूर्ति के बीच का अंतर एक ज्वलंत मुद्दा है। लोकप्रिय दवाओं का स्टॉक जल्दी खत्म हो जाता है। प्रोत्साहनों और भुगतानों को जारी करने में देरी से हितधारक हतोत्साहित होते हैं।
- पी.एम.बी.जे.पी. के तहत काम करने वाले दवा विक्रेताओं को भुगतान 60 दिनों के भीतर कर दिए जाने चाहिए। भुगतान में देरी से उनका लाभ घटने के अलावा दवाओं की आपूर्ति में भी देरी होती है।

- सहकार-से-समृद्धि ने पी.ए.सी.एस. को आवश्यक मज़बूती दी है। प्रारंभिक दिक्कतों को दूर कर लिया जाए तो पी.ए.सी.एस. संचालित जन औषधि केंद्र निस्संदेह किफायती मूल्यों पर गुणवत्तापूर्ण दवाएँ उपलब्ध कराने के लिए सबसे प्रभावी संवहनीय मॉडल साबित हो सकते हैं।

आउटसोर्सिंग से आउटपेसिंग तक

संदर्भ

- भारत में 1,800 वैश्विक क्षमता केंद्र यानी ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (GCC) हैं, जो विश्व भर के कुल केंद्रों की संख्या के लिहाज से आधे से अधिक हैं। यह बात स्पष्ट है कि भारत ने वैश्विक क्षमता केंद्र की राजधानी के रूप में अपनी स्थिति को मज़बूत किया है।

वैश्विक क्षमता केंद्र

- वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) पूरे विश्व की कंपनियों से जुड़े विभिन्न कार्यों की देखरेख करने वाले कैप्टिव हब के रूप में अनेक प्रकार की गतिविधियों के लिए काम करते हैं। इन गतिविधियों में एनालिटिक्स, प्रौद्योगिकी संबंधी समर्थन, उत्पाद विकास एवं नवाचार शामिल हैं। देश में 19 लाख से अधिक लोगों को रोज़गार मिलने से वैश्विक स्तर पर उच्च-मूल्य वाली सेवाएँ देने की भारत की क्षमता में उछाल आया है।
- जी.सी.सी. पावरहाउस वह गुणक हैं जो निवेश किए गए प्रत्येक डॉलर के लिए 3 डॉलर का लाभ प्रदान करते हैं और जी.सी.सी. में बनाए गए प्रत्येक रोज़गार के लिए स्थानीय अर्थव्यवस्था में पाँच गुना अधिक रोज़गार सृजन को बढ़ावा देते हैं।
- भारत ने वैश्विक क्षमता केंद्रों के संदर्भ में एक प्रमुख गंतव्य के रूप में खुद को स्थापित कर लिया है। विश्व भर में अपने समकक्ष अर्थव्यवस्था वाले देशों की तुलना में इसने बेहतर प्रदर्शन किया है।

- जी.सी.सी. का तेज़ी से बढ़ना भारत के व्यापार-अनुकूल वातावरण को प्रदर्शित करता है। कारोबारी सुगमता, मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया जैसी पहल जी.सी.सी. की ज़रूरतों के साथ पूरी तरह से तालमेल रखती हैं।

कारोबारी सुगमता

- स्पाइस+ (इलेक्ट्रॉनिक रूप से कंपनी को शामिल करने के लिए सरलीकृत प्रोफॉर्मा) की शुरुआत ने कंपनी के पंजीकरण की प्रक्रिया को आसान बना दिया है। इससे काम में कम मेहनत एवं कम समय लगता है। वर्ष 2024 में जन विश्वास (प्रावधान संशोधन) अधिनियम की शुरुआत ने अनुपालन संबंधी अत्यधिक बोझ को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इस अधिनियम ने 19 मंत्रालयों द्वारा प्रबंधित 42 केंद्रीय अधिनियमों में 183 प्रावधानों को अपराधमुक्त कर दिया, जिससे उद्यमियों के लिए नियमों को सरल बनाकर व्यापार-अनुकूल वातावरण को और भी अधिक बढ़ावा मिला।

मेक इन इंडिया

- जी.सी.सी. को भारत की प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) नीतियों से लाभ मिला है जो कई क्षेत्रों में शत-प्रतिशत विदेशी स्वामित्व को स्वतंत्र रूप से निवेश करने और संचालन करने की अनुमति देता है। विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) और प्रौद्योगिकी पार्कों की स्थापना ने कंपनियों को कर छूट से लाभ उठाने की अनुमति दी है।

डिजिटल इंडिया

- स्किल इंडिया डिजिटल को वर्ष 2023 में केंद्र एवं राज्य के संयुक्त प्रयासों के समन्वय के लिए प्रस्तुत किया गया था।
- यह एक समग्र डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसका उद्देश्य भारत के कौशल, शिक्षा, रोज़गार और उद्यमिता परिदृश्य के बीच तालमेल बिठाना है। यह

प्लेटफॉर्म उद्योगों के लिए प्रासंगिक कौशल पाठ्यक्रम, नौकरी के अवसर और उद्यमिता सहायता प्रदान करता है।

भारत प्रतिस्पर्द्धात्मकता एवं लागत लाभ से परे मूल्य वितरण के लिए पसंदीदा देश

- इस दशक में जी.सी.सी. का प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ भारत में अधिक स्पष्ट रहा है। जी.सी.सी. मूल्य शृंखला में आगे बढ़ने की क्षमता रखते हैं और तेज़ी से नवाचार केंद्रों व उत्कृष्टता केंद्रों (CoE) में परिवर्तित हो रहे हैं, जो अनुसंधान एवं विकास तथा बौद्धिक संपदा के निर्माण जैसे उच्च-मूल्य वाले कार्यों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

रणनीतिक भौगोलिक विस्तार में सुगमता

- अहमदाबाद, कोच्चि, विशाखपट्टनम, जयपुर एवं कोयंबटूर जैसे कई टियर 2 और 3 शहर, बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए अपने जी.सी.सी. स्थापित करने के क्रम में आदर्श गंतव्य के रूप में उभरे हैं। इन शहरों ने विश्व भर की कंपनियों के लिए परिचालन लागत को घटाने से जुड़ी आवश्यकताओं को पूरा किया।

प्रतियोगिता में अग्रणी

- भारत इस प्रतियोगिता में मलेशिया, वियतनाम एवं फिलीपींस जैसे अनेक देशों से आगे है, क्योंकि-
- भारत में एक मज़बूत एवं परिपूर्ण जी.सी.सी. इकोसिस्टम की उपस्थिति
- उच्च गति वाले इंटरनेट और कार्यालय के अत्याधुनिक स्थानों सहित उन्नत भौतिक एवं डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के कारण
- भारत की तुलना में मलेशिया एवं वियतनाम में प्रतिभा के लिए संघर्ष
- मलेशिया एवं वियतनाम का एकमात्र लाभ प्रतिस्पर्द्धी श्रम लागत तक पहुँच है। फिलीपींस बी.पी.ओ. सेवाएँ प्रदान करने से ऊपर नहीं उठ पाया है।

निष्कर्ष

- जी.सी.सी. में उछाल ने रियल एस्टेट, आतिथ्य, खुदरा और परिवहन के क्षेत्र में वृद्धि को बढ़ावा दिया है। इससे ये क्षेत्र व्यापार के समृद्ध केंद्रों में परिणत हो गए हैं। स्टार्टअप, विश्वविद्यालयों व अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग ने जी.सी.सी. को स्थानीय इकोसिस्टम में अधिक एकीकृत किया है, जिससे नवाचार एवं सामंजस्यपूर्ण संचालन को बढ़ावा मिला है। प्रतिभा की उपलब्धता, लागत लाभ व एक समर्थक इकोसिस्टम द्वारा संचालित तेज़ी से स्थापित होने वाली दर ने इसके प्रभुत्व को सशक्त किया है।